Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.shisrrj.com**
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

ऋग्वेद में वर्णित विशिष्ट प्रमुख औषधियाँ एक अध्ययन

डॉ. देव नारायण पाठक
सहायक क्षेत्रीय निदेशक इग्नू, क्षेत्रीय केन्द्र अहमदाबाद।

Article Info

Accepted : 05 Dec 2024
Published : 25 Dec 2024

Publication Issue :
November-December -2024
Volume 7, Issue 6

Page Number : 36-46

सारांश– सनातन संस्कृति में वेदों को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व वेदों के महत्व से परिचित रहा है। भारतीय संस्कृति का आकर्षण ही है कि अनेक पाश्चात्य मनीषियों ने वेदों का अध्ययन और विवेचन किया है। वास्तव में भारतीय संस्कृति के मूल में हमारे 'वेद' ही है। जीवन के आरम्भ से लेकर मृत्यु–पर्यन्त, हर विषय का संकलन वेदों में परिलक्षित होता है। वेद मानव सभ्यता के सबसे पुराने लिखित ग्रन्थ है और यह वैदिक ज्ञान अत्यन्त समृद्ध है। वेदों को अपौरुषेय कहा जाता है। इन्हें श्रुति भी कहते है। जिसका अर्थ है– ''सुना हुआ।''
सनातन संस्कृति के आधारभूत इन वेदों की संख्या चार है। जिनमें से प्रथम वेद 'ऋग्वेद' है। यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद अन्य तीन महत्वपूर्ण वेद है। सभी वेद अपने विशिष्ट वर्ण्य विषयों के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यद्यपि ऋग्वेद सर्वप्रथम लिखित ग्रन्थ है। अतः उसमें वर्ण्य विषय और अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

मुख्य शब्द :– ऋग्वेद, औषधियाँ, प्रथम परिचय

भारतीय संस्कृति में वेदों को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, और उसका कारण वेदों में वर्णित विशिष्ट विषय है। मनुष्य के जीवन के सभी विषयों के सम्बन्ध में वेदों में विशिष्ट विवेचन प्राप्त होता है।

''विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते व एभिर्धर्मादिपुरुषार्था इति वेदाः''[1]

अर्थात् धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष एवं पुरुषार्थ जिसके द्वारा ज्ञात हो अथवा जाना जाये वह ही ''वेद'' है। जनसामान्य, सामान्यतया अज्ञानतावश वेदों को सनातन संस्कृति का परिचायक मात्र मानता है। जबकि वास्तविकता एकदम विपरीत है। हमारी अमूल्य धरोहर के रूप में यदि वेदों को जाना और समझा जाये तो अनेकों अनेक समस्याओं का समाधान हो जाये। वेदों में मानव जीवन के सभी पक्षों पर विस्तृत ज्ञान प्राप्त

1. ऋ0 प्रा0, सम्पा0 मंगलदेव षास्त्री पृ0–5

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

होता है, इसी प्रकार मानव जीवन को आधारहित एवं सुखमय बनाने के लिए अनेक रोगों एवं उनसे सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण औषधियों का विशेष एवं विस्तृत वर्णन भी प्राप्त होता है।

ऋग्वेद, चारों वेदों में सर्वप्रथम लिखा गया वेद है जो कि देवस्तुतियों का प्रमुख ग्रन्थ है।

''यत्र पादकृता व्यवस्था स मंत्रः ऋङ्नाम्।''[2]

आचार्य जैमिनी के शब्दों में– जो पादबद्ध अथवा छन्दमय व अर्थयुक्त हों वह मंत्र ऋचा कहलाता है। जैसा कि सभी को ज्ञात है कि ऋग्वेद में विभिन्न देवताओं से सम्बन्धित ऋचाएं हैं, जिन्हें हम 'देवस्तुति' कहते। इसी कारण इस ''प्रथम वेद'' को ऋग्वेद कहा गया। यद्यपि ऋग्वेद स्तुतियों एवं ऋचाओं का प्रमुख ग्रन्थ है। तथापि ऋग्वेद में अनेक महत्वपूर्ण औषधियों की उपयोगिता एवं उनका महत्व वर्णित किया गया है। हम कह सकते हैं कि ऋग्वेद ही वह प्रथम लिखित ग्रन्थ है जो कि ''औषधियों का प्रथम परिचायक'' है। ऋग्वेद के दशम मण्डल का 97वां सूक्त औषधिसूक्त के नाम से ज्ञात है। ''औषधिसूक्त'' वास्तव में आरोग्यप्राप्ति की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस सूक्त के द्वारा ही हमें सर्वप्रथम औषधियों के प्रायोगिक ज्ञान, उसका वर्गीकरण, उनका स्वरूप इत्यादि ज्ञात होता है। औषधि सूक्त के द्वितीय मंत्र में औषधि को सहस्र शक्तियों को धारण करने वाली माता कहा गया है –

शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रूहः
अधा शतक्रत्वों यूयमिमं में अगदं कृत।। 2।।[3]

हे माताओं ! तुम्हारी शक्तियाँ सहस्र प्रकार की है एवं आपकी वृद्धि भी सहस्र प्रकार की है। हे शत–सामर्थ्य धारण करने वाली औषधियो ! मेरे इस रूग्ण पुरुष को निश्चय ही रोगमुक्त करो।

औषधियों को सभी वनस्पतियों में सर्वश्रेष्ठ एवं सभी वृक्षों को इनकासेवक भी

कहा गया है–

''त्वमुक्षमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः।''[4]

हे औषधि! तुम सर्वश्रेष्ठ हो। सभी वृक्ष तुम्हारे आज्ञाकारी सेवक हैं।

ऋग्वेद के औषधिसूक्त से ज्ञात होता है कि औषधियों का प्रयोग न केवल जनमानस अपितु पशुओं के विभिन्न रोगों में उपचार हेतु भी किया जाता रहा है–

द्विपच्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम्।।20।।[5]

हमारे द्विपाद तथा चतुष्पाद प्राणी और अन्य जीव– ये सभी आपकी कृपा से नीरोग रहें।

2. शबर, जै0मी0सू0 भाष्य
3. ऋ0–10.97–2
4. औषधिसूक्त ऋ0 10–97.23
5. औ0सू0 ऋ0–10–97–15

ऋग्वेद में औषधियों को उनकी उत्पत्ति/प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत भी किया गया है –

या फलिनीर्था अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

वृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुज्चन्त्वंहसः।।15।।[6]

अर्थात् (1) जिनमें फल लगते हैं, (2) जिनमें फल नहीं लगते, (3) जिसमें फूल प्रकट होते हैं, (4) जिनमें फूल प्रकट नहीं होते हैं, वे सभी औषधियाँ वृहस्पति की आज्ञा होने पर हमें इस आपत्ति से मुक्त करें।

उपरोक्त के आधार पर औषधियों के चार प्रकार (1) फलयुक्त (2) फलरहित (3) पुष्पयुक्त एवं (4) पुष्परहित कहे गये हैं।

औषधीय वनस्पतियों के सन्दर्भ विषेष में यदि हम बात करें तो ऋग्वेद प्रथम औषधीय परिचायक ग्रन्थ है, किन्तु अथर्ववेद में औषधियों का विषद वर्णन प्राप्त होता है। यहॉ हम ऋग्वेद के सन्दर्भ में चर्चा कर रहे है। अतः ऋग्वेद में उल्लिखित औषधियों के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवेचन कर रहे हैं–

ऋग्वेद में कई बहुमूल्य एवं देवतुल्य औषधियों के सम्बन्ध में वर्णन प्राप्त होता है जिनका वर्तमान में भी आयुर्विज्ञान द्वारा मनुष्यों को उत्तम स्वास्थ्य एवं आरोग्यता प्राप्त करने हेतु किया जा रहा है। इनमें से कुछ का वर्णन इस प्रकार है–

1. सोम :– ऋग्वेद में सोम को औषधियों के राजा के रूप में बताया गया है–

''औषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा।[7]

''अपने राजा सोम के साथ सभी औषधियॉ सहमत होकर कहती है।''

सोम नामक पौधे का ऋग्वेद में अनेक स्थान पर उल्लेख मलिता है। औषधिसूक्त में सोम को औषधियों का राजा कहा गया है। अतः स्पष्ट है कि सोम एक प्रधान औषधीय वनस्पति है। जिसका प्रयोग औषधीय प्रयोजनों के साथ ही वैदिक अनुष्ठानों में प्रमुखता से किया जाता रहा है। सम्भवतः इसका प्रयोग दर्द निवारक के साथ ही षक्तिवर्धक पेय के रूप में किया जाता था।

2. तुलसी :– तुलसी के औषधीय गुणों से आज सभी परिचित है और भारतीय संस्कृति में इसे पवित्र पौधे के रूप में सम्मान प्राप्त है। इसका उल्लेख ऋग्वेद में त्वचा सम्बन्धी विकारो, ष्वांस सम्बन्धी विकारों, पाचन सम्बन्धी विकारों को दूर करने के अतिरिक्त रोग निरोधक क्षमता को बढ़ाने वाली अत्यन्त गुणकारी औषधि के रूप मिलता है।

---

6. औ0सू0 ऋ0 10–97–22
7. औ0सू0 ऋ0 10–97–22

3. अश्वगंधा – अश्वगंधा ऐसी औषधीय वनस्पति है जिसका उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में विभिन्न प्रकार से किया जाता है। यह शरीर प्रतिरक्षा की क्षमता को बढ़ाने के साथ ही तनाव एवं चिंता को कम करने में सहायक होता है, साथ ही मस्तिष्क के कार्य क्षमता में सुधार करता है।

4. ब्राह्मी– यह ऋग्वेद में वर्णित ऐसी औषधि है जिसका प्रयोग स्मृति विकास एवं एकाग्रता बढ़ाने के लिया किया जाता था। पाचन विकार को दूर करने के साथ ही रक्त को शुद्ध करने के लिए भी इसका उपयोग महत्वपूर्ण है।

5. गुग्गुल :–

ऋग्वेद में इस औषधि का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है। वास्तव में यह एक विषिष्ट प्रकार के वृक्ष की छाल से प्राप्त गोंद या राल है, जिसका उपयोग विभिन्न रोगों के उपचार में किया जाता था।

6. हरीतकी :– ऋग्वेद में वर्णित हरीतकी नामक यह औषधि आयुर्वेद में प्राणदा, अमृता, विजया, मेध्या नामों से भी जानी जाती है। सामान्यतया इसे हरड़ के नाम से भी जाना जाता है। 'त्रिफला' का एक महत्वपूर्ण फल हरीतकी/हरड़ भी है। इसका प्रयोग विषेष रूप से पाचन सम्बन्धी विकारों को दूर करने के लिये किया जाता है।

7. अश्वत्थ– इसे पीपल के रूप में जाना जाता है। इसका वर्णन ऋग्वेद के अतिरिक्त अथर्ववेद में भी प्राप्त होता है। वर्तमान समय में भी यह विषेष रूप से पूजनीय माना जाता है। इसे 'यज्ञिय वृक्ष' अर्थात् जिसका यज्ञ में प्रयोग हो, कहा जाता है। इसके पत्तों का प्रयोग घावों पर लेप के रूप में किया जाता है। अष्वत्थ वृक्ष के दूध का प्रयोग दर्द निवारक, और सूजनरोधी औषधि के रूप में किया जाता था। इसके प्रत्येक भाग फल, बीज, पत्ते, छाल इत्यादि के विषिष्ट गुणों के कारण इसे ऐतरेय ब्राह्मण में वनस्पतियों के सम्राट के रूप में सम्बोन्धित किया गया है। अष्वत्थ (पीपल) की लकड़ी से हवन द्वारा उन्माद रोग के उपचार का भी विधान था।

8. शिग्रु–

शिग्रवो यक्षवश्च[8]

ऋग्वेद में शिग्रु नाम से उल्लिखित यह औषधीय वनस्पति वर्तमान में सहिंजन या ग्रामीण अंचल में सहजन के नाम से जानी जाती है। सहजन या शिग्रु का प्रयोग हृदय के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। इस वनस्पति की पत्तियों का प्रयोग त्वचा को कांतिरूप बनाने एवं उसके सामान्य रोगों में उपचार हेतु किया जाता है। केशों को पोषण देने एवं उसके विकारों को दूर करने में सहचन या शिग्रु के पत्तों की पोटली

8. ऋ–7–18–19

सूजन को दूर करने में कारगर है। इसके अतिरिक्त षिग्रु की छाल का लेप बनाकर गांठयुक्त फोड़े को पकाने में प्रयोग किया जाता है। दाँत सम्बन्धी विकारों में भी षिग्रु का प्रयोग अत्यन्त प्रभावी होता है।

9. उत्तानपर्णा :–

'उत्तानपर्णो सुभगे देवजूते सहस्वति'[9]

इस महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पति का वर्णन ऋग्वेद के अतिरिक्त अथर्ववेद में देखने को मिलता है। इसे पाठा या पाढ़ा नाम से भी जाना जाता है। उत्तानपर्णा को वीर्यवर्धक, और मेधावर्धक औषधि के रूप में जाना जाता है। भावप्रकाष में भी इसके बारे में ज्ञात होता है। इसके अनुसार वात एवं कफनाषक होने के साथ ज्वरषूल, वमन, कोढ़, दाह जैसे रोगों के उपचार में लाभकारी है। इस औषधि का प्रयोग अतिसार, खुजली, ष्वास, हृदय, विष एवं कृमि सम्बन्धी समस्याओं में भी किया जाता रहा है।

10. पर्ण :–

'पर्णे वो वसतिष्कृता'[10]

पर्ण का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है, इसके अतिरिक्त यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में भी। इसके बारे बारे में उल्लेख किया गया है। ''पर्ण'' का प्रयोग वस्तुतः पलाष (ठाक) के लिए किया गया है। इसके पत्तों एवं पुष्पों का प्रयोग अनेक रोगों में किया जाता है। आयु, बल एवं समृद्धि हेतु पर्णमणि के प्रयोग का उल्लेख प्राप्त होता है। अतिसार, रक्तप्रदर, कृमिषूल में विषेष प्रभावकारी होता है। पलाष या पर्ण के पत्तों का गर्म लेप सूजन को दूर करने हेतु प्रयोग किया जाता है।

11. कुशर–

''शरासः कुशरासो दर्भासः''[11]

ऋग्वेद में कुशर का उल्लेख शर व दर्भ नामक औषधियों के साथ किया गया है। इसका प्रयोग विषनाशक के रूप में किया जाता है। आचार्य सायण के अनुसार यह एक प्रकार का सरकण्डा है जो कि छिद्रयुक्त होता है।

12. क्याम्बू/कियाम्बू– ऋग्वेद में इस औषधीय वनस्पति का उल्लेख ''कियाम्बू'' नाम से मिलता है, जबकि अथर्ववेद में इस वनस्पति का नाम ''क्याम्बू'' प्राप्त होता है। यह एक जलीय पौधा नै जो कि शीलतला हेतु प्रयुक्त किया जाता था। यह जलीय पौधा शीतर्वीय व दाहशामक होता है।

---

9. ऋ0–10–145–2
10. ऋ0–10–97–5
11. ऋ0–1–191–3

13. घृताची– इस औषधि का वर्णन ऋग्वेद के अतिरिक्त अथर्ववेद में भी प्राप्त होता है। तैत्तरीय संहिता में भी ''घृताची'' औषधि का उल्लेख प्राप्त होता है –

''विश्वाची च घृताची चाप्सरासौ।''[12]

''तौदी नामासि कन्या घृताची नाम।''[13]

ऋग्वेद में इसका अर्थ घृतपूर्ण लिया जाता है। अथर्ववेद में यह लाक्षा के पर्याय के रूप में भी आया है। इसे सर्पविषनाशक औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। राजनिघण्टु (1.2) में बड़ी इलायची को घृताची व कन्या नाम से भी जाना जाता है।

14. तेजन–

''क्षेत्रमिव विममुस्तेजनेन।''[14]

तेजन नाम यह औषधि ऋग्वेद व अथर्ववेद में सरकण्डे एवं बांस के पर्याय के रूप में प्रयुक्त की गयी है। इसके नरम व कोमल पत्तों को कफरोग, खांसी, श्वास व ज्वर में प्रयुक्त किया जाता है। इसकी गांठों का क्वाथ लोकिया में अत्यन्त प्रभावी होता है। साथ ही यह रक्तस्राव को रोकने में भी प्रभावकारी है।

15. दर्भ– दर्भ नामक औषधि का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

''शरासः .... दर्भासः।''[15]

इसके अतिरिक्त मैत्रायणी संहिता में भी दर्भ नाम औषधि का उल्लेख मिलता है –

''दर्भा आप ओषधयः।''[16]

दर्भ नामक औषधि के अनेक पर्याय हैं– जैसे सहस्रपर्ण, सहस्रकाण्ड, शकण्ड, सहस्रवीर्य, दुश्च्यवन। इसे एक श्रेष्ठ औषधि के रूप में जाना जाता है। अथर्ववेद में इस औषधि को विषनाशक, आयुवर्धक व क्रोधशामक (मन्युशमन) औषधि के रूप में वर्णित किया गया है।

''अयं दर्भो विमन्युकः।''[17]

भावप्रकाश निघण्टु के अनुसार यह वनस्पति पथरी, प्रदर, व त्रिदोष (वात, पित्त एवं कफ) नाशक है। इसके अतिरिक्त पैप्पलाद संहित के अनुसार इस औषधि का कई प्रकार के दर्द निवारक के रूप में प्रयोग किया जाता है– जैसे शिरःशूल, उदरशूल इत्यादि। इसके अतिरिक्त बिच्छू व सर्प विष को उतारने में भी यह औषधीय वनस्पति प्रयोग की जाती है।

---

12. तैत्ति0 4–4–3–2
13. अ0 10–4–24
14. ऋग्वेद 1–110–5
15. ऋग्0–1–191–3
16. मैत्रा0 1–7–2
17. अ0–19–28, 29, 30

16. पुण्डरीक–

"हृदाश्च पुण्डरीकाणि।"[18]

"हृदो वा पुण्डरीकवान्।"[19]

इसका उल्लेख ऋग्वेद व अथर्ववेद में मिलता है। पुण्डरीक शब्द का प्रयोग सफेद कमल के लिये किया गया है। यह अत्यन्त शीतल व मधुर होने के साथ कफ व पित्तनाशक भी होता है। यह प्यास, दाह, रक्त–विकार, विष व फोड़े में अत्यन्त प्रभावी होता है।

17. बिभीतक, बिभीदक, विभीतक, विभीदक–

"विभीदको जागृविः।"[20]

इस औषधि वनस्पति का उल्लेख ऋग्वेद के अतिरिक्त यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में भी मिलता है। इसे बहेड़ या बहेड़ा के रूप में पहचाना जाता है। यह अत्यन्त गुणकारी है। इसके फल का प्रयोग गलक्षत में घी में भूनकर प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह कफ, पित्तनाशक भी होता है। इसे चूर्ण के रूप में दस्तावर, खांसी, केशवृद्धि व स्वरभेद, अतिसार, शोध व प्लीहावृद्धि में प्रयोग किया जाता है।

18. पुष्कर :– पुष्कर औषधि का उल्लेख ऋग्वेद में सर्वप्रथम किया गया है।

"निशिक्तं पुष्करे मधु।"[21]

इसके अतिरिक्त यजुर्वेद में एवं अथर्ववेद में इसका उल्लेख मिलता है।

"पुष्करादध्यथर्वा निरमन्यत"[22]

"पुष्कर पर्ण पात्रम्।"[23]

कमल या पुष्कर के पत्तों को भोजन के लिये पात्र के रूप में प्रयोग किया जाता था। भावप्रकाश निघण्टु के अनुसार इसका प्रयोग वर्ण (त्वचा का रंग) को उत्तम बनाने विशेष रूप से होता था। इसकी शीतल प्रकृति के कारण ही प्यास, दाह, फोड़ा, विसर्प को समाप्त करने में इसे प्रयोग किया जाता है। श्वास विकास एवं पसली के दर्द में पुष्कर के पत्तों का प्रयोग किया जाता है। यह कफ, पित्तनाशक एवं रक्त विकार को दूर करने में अत्यन्त प्रभावी है। ऋग्वेद में एक स्थान पर कमल के मधु का वर्णन मिलता है।

19. मुञ्ज :–

"पिबता मुञ्जनेजनम्।"[24]

---

18. ऋ0 10–142–8
19. अ0 6–103–1
20. ऋ0 10–34–1
21. ऋ0 8–72–11
22. यजु0–11–32
23. अ0–8–14–6

मुञ्ज नामक औषधीय वनस्पति का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होता है। इसके बाद यजुर्वेद व अथर्ववेद में इसका वर्णन मिलता है। इसे पवित्र वनस्पति के रूप में भी स्थान प्राप्त है। मुञ्ज की मेखला, रस्सी व आसन भी बनाये जाते हैं, जिनका धार्मिक अनुष्ठान में प्रयोग किया जाता है। उपनयन संस्कार में मुञ्ज की मेखला धारण की जाती है। यह मूंज के नाम से भी जानी जाती है। काष्ठक संहिता में इसे ऊर्जा के स्वरूप या प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है।

"ऊर्ग् वै मुञ्जाः।"[25]

इसे जल प्रधान व पित्तनाशक के रूप में स्वीकार किया जाता है। अथर्ववेद में इसका प्रयोग रक्तस्राव को रोकने के लिये किये जाने का उल्लेख है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह त्रिदोषनाशक वनस्पति है। इसके साथ ही यह दस्त, पेचिश, बवासीर, नेत्ररोग, मूत्ररोग इत्यादि में अत्यन्त प्रभावी है।

20. यव– 'यव' जिसका 'जौ' के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। सर्वप्रथम ऋग्वेद में औषधि के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

"गोभिर्यवं न चर्कृषत्।"[26]

यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में भी इसका उल्लेख मिलता है।

"यद हरिणो यवम् अत्ति।"[27]

"व्रीहिर्यवश्च भेषजौ।"[28]

अथर्ववेद के अनुसार जौ और चावल (यव एवं व्रीहि) भेषज रूप हैं। ऐसा माना जाता है कि जौ में प्राणशक्ति होती है। इसलिये इसे सर्वश्रेष्ठ अन्न कहा जाता है। पैप्पलाद संहिता के अनुसार जौ को वैद्य स्वरूप माना गया है।

"यवो भिषक् यवस्य महिमा महान्।"[29]

यव या जौ की मणि बनाकर ज्वर व अन्य रोगों को दूर करने के लिये धारण किया जाता है।

जौ प्राकृतिक रूप से पचने में हल्का और शीतल होता है। अतः ग्रीष्म ऋतु में इससे सत्तू, पायस इत्यादि बनाकर सेवन करने का प्रचलन है। यह अपने विशिष्ट गुणों के कारण कण्ठरोग, त्वचारोग, श्वास, रक्तविकार, तृषा व उदररोगों में अत्यन्त लाभकारी है।

21. वंश :– यह बास के लिये प्रयुक्त हुआ है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है –

---

24. ऋ0 1–161–8
25. काष्ठक0 19–10
26. ऋ0 1–23–15
27. यजु0–23–30
28. अथर्व0–8–7–20
29. पैप्प0–16–4–8

''उद् वंशमिव येमिरे।''[30]

इसके अतिरिक्त अथर्ववेद में भी 'वंश' का उल्लेख मिलता है–

''वंशानां ते नहनानाम्।''[31]

इसके अन्य नाम त्वक्सार, तृणध्वज, वेणु भी भावप्रकाश–निघण्टु में मिलते हैं। वंशलोचन की प्रकृति शीतल है जो कि शक्तिप्रद होता है। इसके पत्तों का रस निकालकर रक्तरोधी के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। क्षयरोग, खांसी, श्वास सम्बन्धी रोग, कफ सम्बन्धी रोग एवं ज्वर में इसका लाभ उल्लेखनीय है।

22. शाल्मलि :–

''सुकिंशुकं शल्मलिम्।''[32]

''शल्मलिवृर्द्ध्या।''[33]

शाल्मलि जिसे 'सेमर' के नाम से भी जाना जाता है। ऋग्वेद में इसके लिये शल्मलि शब्द प्रयोग किया गया है। इस वनस्पति का प्रयोग अतिसार रूधिरातिसार एवं तीव्र एजःस्राव में किया जाता है। शल्मलि के वृक्ष के मूल (जड़) को क्षयरोग (टी.बी.) में दिया जाता है। रूधिर सम्बन्धित विकार एवं रक्तपित्त, वात को दूर करने में अधिक प्रभावी होता है। ऋग्वेद के अनुसार शल्मलि या सेमर के फूलों को ''शिम्बल'' कहा जाता है।

23. शर :–

''विद्याशरस्यपितरंपर्जन्यं''[34]

'शर' नामक इस औषधि का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में, और उसके पश्चात् अथर्ववेद व मैत्रायणी संहिता में मिलता है। यह विष के प्रभाव को दूर करने में लाभकारी है। संस्कृत में इसे बाण व भद्रमुंज के नाम से भी जाना जाता है। इसका प्रयोग मूत्रावरोध, दाह, नेत्ररोग को दूर करने हेतु किया जाता है।

24. वेतस :– जलीय प्रदेश में होने वाली यह औषधीय वनस्पति 'बेंत' के रूप में भी जानी जाती है। एक ओर तो शीतल एवं पित्तनाशक औषधि के रूप में प्रयुक्त होती है। वहीं इसका प्रयोग चटाई, शलाका, चम्मच इत्यादि पात्र बनाने में भी किया जाता है। इसका उल्लेख ऋग्वेद के साथ ही अथर्ववेद एवं यजुर्वेद में भी मिलता है–

---

30. ऋ0 1–10–1
31. अथर्व0 9–3–4
32. ऋ0 10–85–20
33. यजु0 23–13
34. अ.1.2.1

"हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्।"[35]

इसी प्रकार यजुर्वेद में–

"हिरण्ययो वेतसो मध्ये अग्रेः।"[36]

"यो वेतसं हिरण्ययं .... वेद।"[37]

वेतस का प्रयोग दाह, शोध, बवासीर, विसर्प, रक्त, पित्त, पथरी एवं वात व कफ के निवारक के रूप में किया जाता है।

25. दुर्वा :– 'दूर्वा' शब्द ऋग्वेद में 'दूब' के लिये प्रयोग किया गया है।

"दूर्वाया इव तन्तवो व्यस्मदेतु दुर्मतिः।"[38]

दूर्वा का उल्लेख यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में भी मिलता है। इसे परम दिव्य लता भी कहा जाता है। ऋग्वेद के अनुसार यह मेधावर्धक औषधि है। अथर्ववेद के अनुसार यह पापनाशक एवं शापदोष नाशक औषधि है। इसके पर्याय स्वरूप सहनामा, सहस्रवीर्या, शतमूला, अघद्विष्टा, शपथयोपिनी नाम भी प्रयुक्त होते हैं। प्राकृतिक रूप से संकोचक होने के कारण नक्सीर एवं शस्त्र इत्यादि के घाव के परिणामतः होने वाले रक्तस्राव को रोकने में यह बहुत प्रभावी है।

26. खदिर :– खदिर' का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद में 'खदिर' शब्द 'खैर' के वृक्ष के लिये आया है। यह औषधि ओज एवं बलवर्धक होती है। पाश्चात्य मतानुसार खदिर (खैर) बल में वृद्धि करने वाली औषधि है। अथर्ववेद के अनुसार खदिर के सारभाग की मणि को बांधने से तेज एवं ओज में वृद्धि होती है।

"मणिं .... खदिरमोजसे।"[39]

खदिर के विशिष्ट औषधि गुणों का उल्लेख भावप्रकाश निघण्टु में भी प्राप्त होता है। इसके अनुसार खदिर अत्यन्त गुणकारी औषधि है जो कि खुजली, कृमि, सूजन, पित्त, कोढ़, कफ, रूधिर विकार इत्यादि में अत्यन्त प्रभावकारी है। इसके अतिरिक्त बच्चों में आंव आना, खूनी पेचिश, विषभज्वर (फ्लू) व मांसपेशियों को दुर्बलता में भी इसका सेवन किया जाता है। दाँतों की समस्याओं में भी यह प्रभावशाली है।

27. उर्वारुक :– इसका सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त होता है। जहॉ शिवस्तुति वाले मंत्र में इसकी उपमा मृत्यु के बन्धन से मुक्ति हेतु दी गयी है–

---

35. ऋ0 4–58–5
36. यजु0 13–38
37. अथर्व0 10–7–41
38. ऋ0 10–134–5
39. अथर्व0 10–6–7

"उर्वारुकमिव बन्धनामृत्योमुक्षीय मामृतात् ।"[40]

'उर्वारुक' का प्रयोग ककड़ी एवं खरबूजा के लिये किया गया है। भावप्रकाशानुसार कच्ची ककड़ी शीतल, मधुर और पित्त का नाश करने वाली होती है। वहीं खरबूजा बलदायक, वीर्यवर्धक, वात एवं पित्त नाशक होता है।

उपसंहार– ऋग्वेद में कई विशिष्ट औषधियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। चूँकि ऋग्वेद में सर्वप्रथम औषधियों का परिचय प्राप्त होता है, इस दृष्टि से ऋग्वेद और भी विषिष्ट हो जाता है और साथ ही इसमें वर्णित औषधियाँ भी बहुमूल्य हो जाती है।

ऋग्वेद में उपरोक्त के अतिरिक्त कई महत्वपूर्ण औषधियों के बारे में पता चलता है जिसका उपयोग समस्त प्राणी जगत के कल्याण के लिए किया जाता रहा है। साथ ही, वर्तमान में भी उतनी ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लोककल्याणकारी सूक्त संग्रह संकलनकर्ता श्रीमनीष त्यागी संस्थापक एवं अध्यक्ष श्रीहिन्दूधर्मवैदिक एजुकेशन फाउंडेशन
2. भावप्रकाशनिघण्टु व्याख्या पं. विश्वनाथ द्विवेदी मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 1978
3. वेदों में आयुर्वेद, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी, विश्व भारती अनुशासन परिषद्, भदोही

40. ऋ0 7–59–12